कोरबा। 'अंतर्राष्ट्रीय वृद्धा दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं ब्र.कु.रूक्मणी बहन, ब्र.कु.इंद्रप्रताप तथा अन्य।

रायपुर। 'चैतन्य देवियों की झांकी' का उद्घाटन करते हुए रमन सिंह संस्थान की वीणा बहन, क्षेत्रिए संचालिका ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.सविता बहन तथा अन्य।

ज्ञान शिखर, इंदौर। ज्वालामुखी योग तपस्या पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.ओम प्रकाश भाई जी।

वरदानी भवन। 'चैतन्य महालक्ष्मी' की झांकी का उद्घाटन करते हुए भास्कर समूह के संचालक रमेश अग्रवाल, विष्णु बिंदल, ब्र.कु.सुमित्रा बहन तथा अन्य।

जावरा। सरस्वती शिशु मंदिर में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.सवित्री बहन तथा मंचासीन हैं निर्मला पाटीदार, प्राचार्य नंदलाल पाटीदार, इंद्र सक्सेना।

कोरबा। दक्षिण पूर्वी कोयला प्रक्षेत्र के सुरक्षाकर्मियों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में हैं महाप्रबंधक महेश दास महंत, प्रेमचंद कुशवाहा, ब्र.कु.ज्योति बहन तथा अन्य।

वाणी का सौंदर्य

ब्र.कु.रमेश...

वाणी मानव जीवन का दर्पण है, प्रतिबिम्ब है, जो मानव के अवगुण, चरित्र, भाव-स्वभाव को दर्शाती है। ओछे शब्द बोलना हीनता तथा असभ्यता की निशानी है। लेकिन सभ्य और समझदार लोग कभी ओछे शब्द नहीं बोलते। वह समय के अनुकूल आवश्यकता पड़ने पर ही दो मधुर शब्दों से अपना काम पूरा कर लेते हैं, यही मधुर-मीठी वाणी का सुंदर उपहार है। इसलिए किसी ने कहा है - 'मानव को दो कान, दो आँखें मिली, लेकिन जीभ एक ही है, क्योंकि हम ज्यादा सुनें और देखें परंतु कम से कम और मधुर बोलें', यही वाणी की श्रेष्ठता है।

अधिक बोलने वाला व्यक्ति कभी भी अपनी वाणी के ऊपर काबू रख नहीं सकता। जैसे मानव के शरीर में रोग लग जाता है - ज्वर, खांसी, कैंसर आदि... उसी प्रकार जब वाणी के रोग - अधिक बोलना, असमय किसी के बीच बोलना, असत्य बोलना, कटु वचन कहना, चुभती बात और राग-द्वेष वर्द्धक बोल भी रोग के समान हैं। इन रोगों पर काबू पाने के लिए अपनी वाणी को वश में रखें और बोले तो अमूल्य बोल बोलें, यही तो वाणी की महानता है।

दुनिया में इस वाणी के आधार से ही मानव कई अच्छे कार्य सिद्ध करता है। इसलिए कहा है कि पहले विवेक की तराजू पर तौलकर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। अगर जहां विवेक काम नहीं करता वहां यह छोटी जिव्हा अपने ही नाश का कारण बन जाती है। एक जापानी कहावत भी है कि - 'जिव्हा केवल तीन इंच लम्बी होती है किंतु वह 6 फुट लम्बे आदमी का भी कत्ल कर सकती है।' जिस प्रकार यह दूसरे का कत्ल कर सकती है, तो कभी स्वयं का भी कत्ल कर सकती है। यही छोटी-सी जिव्हा तख्त पर भी बैठा देती है तो तख्ते पर भी लटका देती है। इस छोटी-सी जिव्हा के कारण ही तो महाभारत युद्ध खड़ा हो गया। क्योंकि द्रौपदी ने दुर्योधन को यही बोला कि - ''अंधे की औलाद अंधे'' इसी बोल से दुर्योधन के अंदर बदले की भावना जागृत हो गई, जिसने सारे कुल को काल के गाल में भेज दिया। इसलिए मानव को वाणी से बहुत सोच-समझकर बोलना चाहिए। जिससे किसी को नुकसान न हो, लेकिन औरों को जीयदान मिले।

धर्मयुक्त वाणी वाला कभी किसी की निंदा नहीं करेगा, अपशब्द नहीं बोलेगा, व्यर्थ नहीं बोलेगा। व्यर्थ बोलने वाला माया के प्रभाव के कारण कमजोर आत्माओं को अपना साथी बनायेगा, बुद्धि में व्यर्थ की बातें ही सोचेगा, व्यर्थ बातों का कूड़ा-कचरा इकट्ठा करता रहेगा। ऐसे व्यर्थ बोलने वाला अपना ही नुकसान करता है और सबसे बड़ा नुकसान है व्यर्थ समय गंवाना। व्यर्थ बोलने वाले की आदत होगी कि वह छोटी-सी बात को बहुत लम्बा-चौड़ा कर देगा। ऐसे व्यर्थ बोलने वाला अपनी पवित्रता की शक्ति को भी क्षीण कर देता है। लेकिन धर्मयुक्त वाणी वाला सदा संयम से बोलता है जिसके बोल का ही मूल्य हो जाता है।

बोल का मोल - बोल से ही मानव के जीवन की श्रेष्ठता का मालूम पड़ जाता है। इसलिए हमारे बोल आवश्यकता प्रमाण हों, अगर एक बोल से काम चल जाता हो तो वहां दस-बीस बोल का प्रयोग न करें। कम से कम बोलने वाले के बोल शक्तिशाली और अमृत के समान होते हैं। इसलिए कहते हैं कि इनके मुख से अमृत-वर्षा हो रही है जो मानव-मन को धो डालती है। ऐसे कई उदाहरण हमारे सामने हैं। जैसे महात्मा बुद्ध के मुख से निकले बोल से एक खूंखार डाकू अंगुलीमाल का हृदय भी बदल गया और वह संत बन गया। दूर की क्या सोचें हमारे सामने ब्रह्मा बाबा का ज्वलंत उदाहरण है। जिनके बोल, बोल नहीं लेकिन मोती थे। ब्रह्मा बाबा के मुख से निकले बोल तो अनेकों के लिए वरदान बन गए, जिनसे अनेक आत्माओं को जीयदान मिल गया। उनके मधुर बोल से दुश्मन भी दोस्त बन गए और जीवन के लिए प्रेरणा ले गए। बाबा के बोल में वह ओजस्व और तेजस्व था जो अशांत-दु:खी आत्माओं को शीतलता प्रदान करते थे। बाबा की वाणी तो आज इस जग के लिए नियम बन गयी।

- हमारे बोल स्वमान और रूहानियत के हों, जो मनुष्यों के अंदर परमात्मा शिव में आस्था बिठा दें, 'स्व' का अनुभव करा दें, शक्तिहीन के अंदर शक्ति का संचार कर दें। औरों की हीनता को समाप्त कर दें। यही तो वाणी का सौंदर्य है।

- हमारे बोल मोती के समान हों, जो मानव मन में माला की तरह पिरोए जाएं और हर बोल सिमरण किया जाए। इसी में वाणी की सार्थकता है।

- हमारे बोल मधुर हों, मीठे हों और कम हों। ताकि उसका प्रभाव मानव जगत तो क्या, पशु-पक्षी पर भी अच्छा पड़े और हिंसक प्राणी भी अपनी हिंसा-वृत्ति को त्याग दें।

- हमारे बोल मर्यादायुक्त, दिव्यता की सुगंध से ओत-प्रोत हों, जिसकी सुगंध चारों ओर फैल जाए, जिससे औरों की वाणी में भी वह सुगंध रूपी रस भर जाए।

- मर्यादा पुरुषोत्तम बनने वाले के बोल इतने श्रेष्ठ और मर्यादायुक्त हों जो सुनने वाले

शेष पृष्ठ 4 पर

परमात्मा की विशेषता

ब्र.कु.जगदीश...

मनुष्यात्मायें अनेकानेक हैं। हरेक के अपने-अपने कर्मों का लेखा अलग-अलग है। हरेक के संस्कार भी भिन्न-भिन्न हैं। एक भी आत्मा संस्कारों में दूसरी किसी आत्मा से पूर्णत: नहीं मिलती। जैसा कर्म कोई आत्मा करती है, वैसा ही उसका फल भी वह भोगती है। हर आत्मा का शरीर लेना या अन्य प्रकार से प्रारब्ध पाना उनके अपने-अपने कर्मों पर ही निर्भर करता है।

परंतु लोक और परलोक में जितनी भी आत्मायें हैं, उन सभी में से परमात्मा एक विशेष आत्मा है। अत: उन्हें 'पुरुष विशेष' कहा गया है। जैसे आत्मा देह रूपी पुरी में रहती है वैसे ही परमात्मा ब्रह्मलोक, जिसे 'शिव पुरी' भी कहा जाता है, में रहते हैं। वे इस संसार के शोक, जन्म, जरा-मरण से ऊपर हैं। उन्हें न तो शास्त्र पढ़ने की आवश्यकता है, न माला सुमिरण करने की और न जप साधने की क्योंकि वे तो त्रिकालदर्शी, ज्ञान के सागर और सदा-मुक्त तथा परिपूर्ण हैं। उन्हें कुछ भी अप्राप्त नहीं है। उन्हें कोई भी क्लेश नहीं है न कोई कर्म-बंधन है जिससे मुक्त होने के लिए उन्हें पुरुषार्थ करने की आवश्यकता हो। वे तो इस आकाश तत्व में परिवर्तनशील संसार से ऊपर शाश्वत् शांति वाले लोक में वास करते हैं। यह सत्य है कि परमात्मा को शांति या शक्ति प्राप्त करने का यत्न करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे तो स्वयं सदा ही शांति स्वरूप, आनन्द स्वरूप, प्रेम स्वरूप और सर्वशक्तिमान हैं। वे तो इसके अतुल भंडार हैं। वे तो एक शाश्वत् फव्वारा हैं जो आत्माओं पर ज्ञान, शांति आदि की धारा बरसाते हैं। जो मनुष्यात्मा उनसे योग-युक्त होती है, वह उनसे इन वरदानों को प्राप्त कर सकती है। वे दाता हैं, मनुष्यात्मा को शांति एवं सुख की खोज है। अत: दोनों में बहुत अंतर है। आज कुछ लोग कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। वे कहते हैं कि परमात्मा ही ने अपनी 'माया' द्वारा आवेष्ठित होकर जीव का रूप धारण किया है। उन्हें मालूम होना चाहिए कि परमात्मा तो त्रिकालदर्शी है, वह माया से प्रभावित हो ही नहीं सकते। उनका ज्ञान तो उनमें सदा ही बना रहता है। वे तो सदा पवित्र एवं सर्वशक्तिमान हैं, वे माया के अधीन कभी नहीं होते। आत्माएं अलग हैं, वे ही अल्पज्ञ हैं और माया के अधीन हो जाती हैं क्योंकि वे सर्वशक्तिवान या परिपूर्ण नहीं हैं।

मनुष्य को यह भी मालूम होना चाहिए कि 'माया' तो वास्तव में अज्ञानता, अविद्या, मिथ्या ज्ञान या देहाभिमान का पर्यायवायी है और यह परमात्मा की शक्ति नहीं है बल्कि यह तो मनुष्यात्माओं की अल्पज्ञता का ही परिणाम है। देहाभिमान ही माया का प्रथम रूप है। इसी से ही काम, क्रोध, लाभादि षट् विकार उत्पन्न होते हैं। अत: ये छ: विकार ही माया का रूप हैं। माया तो मनुष्यात्मा को परमात्मा से विमुख करने वाली है। वह तो आत्मा को सम्भ्रांत, पथ-भ्रष्ट अथवा सत्यता से विमुख करने वाली है जबकि दयालु एवं कृपालु परमात्मा मनुष्यात्माओं को ज्ञान-अंजन देकर उनका ज्ञान-चक्षु खोलने वाले, उन्हें मायामोह से निकालकर सुपथ पर लगाने वाले वा शांति देने वाले हैं। प्रभु को 'माया' रूपी छल या 'भ्रम' या 'मिथ्या बोध' का अधिष्ठान मानना तो गोया पतित-पावन परमात्मा की महिमा का निषेध कर उन्हें ही मनुष्यात्मा के पतन का निमित्त-अशिव-मान पाप का भागी बनना है। परमात्मा तो माया से मुक्त करने वाले विकारों की दलदल से निकालने वाले, सदा शिव हैं।